परब्रह्म के परमधाम की शोभा एवं परिक्रमा: जाहिरी और बातिनी परिचय

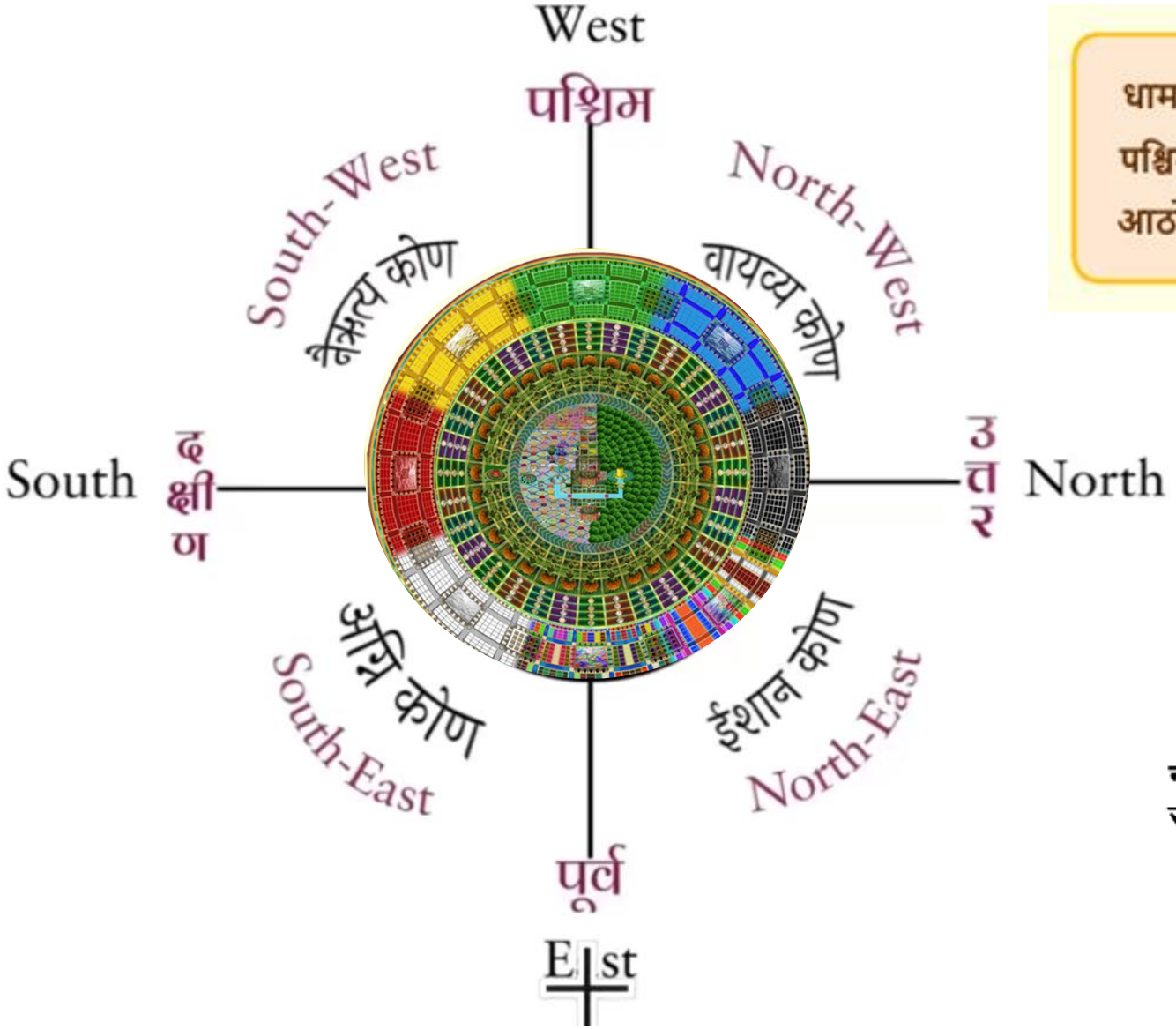

धाम तालाब कुंजवन सोहे, मानिक नेहरें वन की जोहे।
पश्चिम चौगान बड़ोवन कहिए, पुखराजी जमुना जी लहिए।
आठों सागर आठ जिमी ये, पच्चीस पक्ष हैं धाम धनी के।।

जाहिरी = आर्किटेक्ट-चर्चनी
बातिनी = वास्तविक मर्म-आध्यात्मिक भाव-चितवनी
जाहिरी = आर्किटेक्ट-चर्चनी
बातिनी = वास्तविक मर्म-आध्यात्मिक भाव-चितवनी

नूर नीर खीर दधि सागर , घृत मधु इक ठौर ।
रस सर्वरस सागर , बिन मोमिन ना पावे और ।। परि. 43/60

परब्रह्म के परमधाम की शोभा एवं परिक्रमा: जाहिरी और बातिनी परिचय

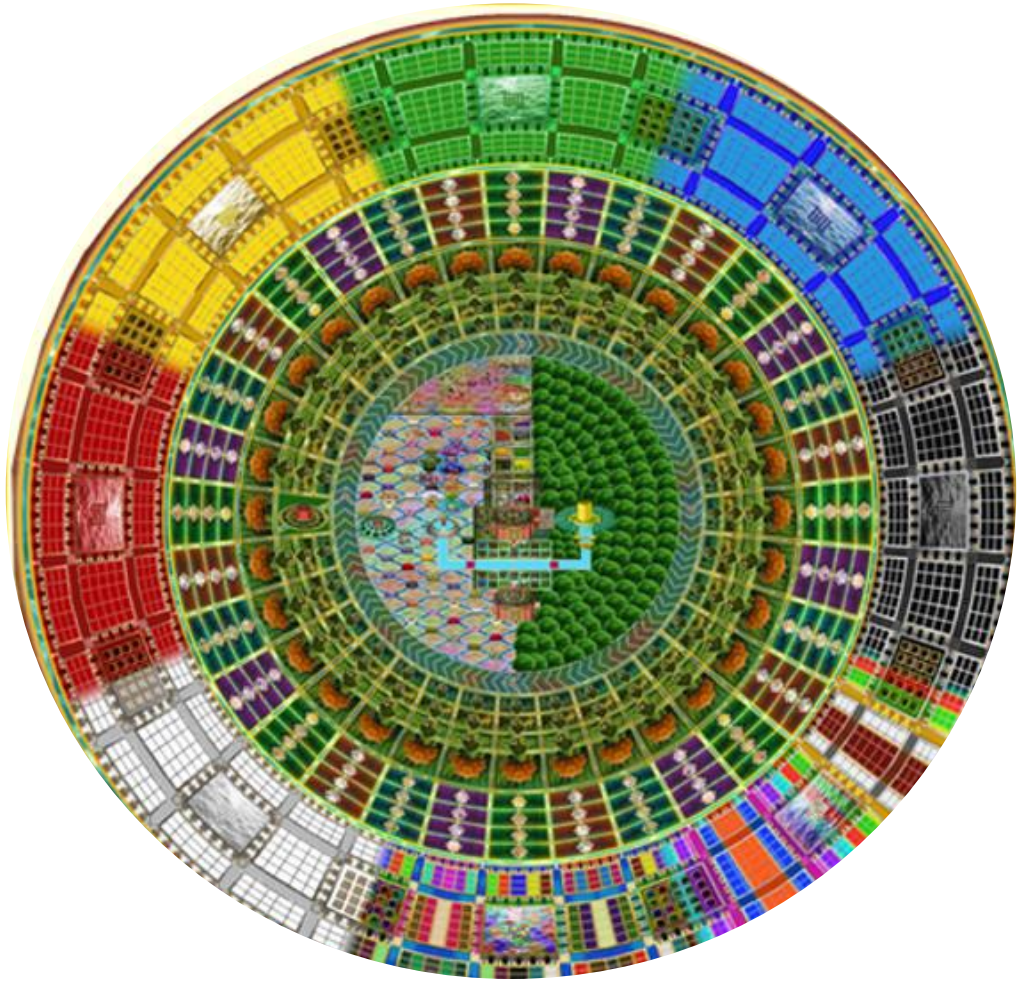

- परिक्रमा किसे कहते हैं?
- परमधाम की शोभा को कैसे समझना चाहिए?
- पचीस पक्ष क्या है?
- लक्ष्य क्या है?
- परमधाम आखिर है क्या?
- परमधाम की शोभा और स्वरूप की आवश्यकता क्यों?
- परमधाम चितवन का फल क्या?
- परमधाम की शोभा और स्वरूप की आवश्यकता क्यों?
- परमधाम चितवन का फल क्या?
- परमधाम पचीस पक्षों की चितवनी भूमिका

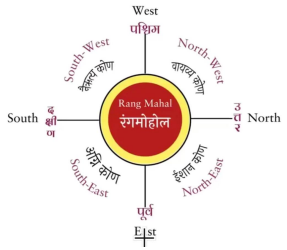

परब्रह्म के परमधाम की शोभा एवं परिक्रमा: जाहिरी और बातिनी परिचय

परिक्रमा ग्रंथ:

- श्री कुलजम स्वरूप का सबसे बड़ा ग्रन्थ।
- आनंद स्वरूप दुल्हन आत्मा के सम्पूर्ण परमधाम की शोभा का वर्णन होने से यह ग्रन्थ "इलाही दुल्हिन" भी कहलाता है।

परिक्रमा किसे कहते हैं?

- आत्मा को उसके जीवन केंद्र रूप अक्षरातीत धामधनी के प्रेमानन्द से विस्तृत पच्चीस पक्षों में विभाजित परमधाम की परिक्रमा :
  - क्षर और अक्षर स्तर की सभी परिक्रमाओं की जननी है| - अंतर नहीं, दिल की दूरी
  - सभी स्तरों को अपने में समा लेती है, सभी स्तर के मनोरथों को पूर्ण करने वाली परमधाम कि परिक्रमा है|

परमधाम की शोभा को कैसे समझना चाहिए?

दो तरह से:

- जाहिरी शोभा समझ कर – जो चर्चनी द्वारा सिखा जाता है|
- बातिनी शोभा – श्री राज श्यामाजी, सखियाँ और सम्पूर्ण परमधाम के पचीस पक्षों के विशेष भीतरी गुण लक्षणों की शोभा|

दोनों को जोड़ कर चितवन या अनुभूति के प्रदेश में प्रवेश संभव है| बातिनी शोभा बुद्धि और दिल में ग्रहण होने के बाद ही जाहिरी चर्चनी अर्थपूर्ण बनती है|

परब्रह्म के परमधाम की शोभा एवं परिक्रमा: जाहिरी और बातिनी परिचय

पचीस पक्ष क्या है?

- परब्रह्म की प्रेमानन्द लीला के पच्चीस आयाम (dimensions) है, जिससे उनकी साहयबी और प्रेम पूर्ण रूप से हमारी बुद्धि में ग्रहण हो सकते हैं|
- जिस तरह पचीस तत्वों के तालमेल से मनुष्य अस्तित्व की लीला स्वस्थ रूप से चलती रहती है, ठीक वैसे ही पचीस पक्षों की समग्र शोभा ग्रहण होने पर चितवन में प्रेमानन्द भी सर्वाधिक मात्रा में संभव है।

लक्ष्य क्या है?

- आत्मा का अपने मूल अकथ और अगम निज-स्वरूप (परात्म) और धाम की शोभा एवं लीला में अवस्थित होना|
- परमधाम की दिव्यता, असीमता और अनन्तता के बोध द्वारा दिल में दिव्य भूमिका के सुन्दर प्रतिबिम्ब में रस मग्न होना |

परमधाम आखिर है क्या?

- परमधाम परब्रह्म धणी के अद्वैत नूर तत्व का विस्तृत शुद्ध दिव्य चिन्मय स्वरूप है। सत, चिद, और आनंदमय, अति कोमल और अनंत विध सुगंधी से परिपूर्ण । चित्त का कालमायिक बंधनों से परे हो कर, योगमायिक व्रज-रास से परे चिन्मय, चिदानन्द रूपी दिव्याति-दिव्य भूमिका में प्रवेश|
- परमात्मा, परमधाम और वहां के कण कण सहित सर्व स्वरुप सत, अर्थात नित्य है एवं अप्राकृतिक है| नश्वर जगत के जड़ पदार्थों से एवं जड़ प्रकृति सर्वथा विपरीत है।

परमधाम की शोभा और स्वरूप की आवश्यकता क्यों?

- परमधाम वह असीम भूमिका है जहां परब्रह्म और परात्माओं एवं वहाँ के कण कण के बीच प्रेमानन्द का लीला विलास अनंत विध से निरंतर एवं नए नए रूप से होता रहता है।
- परमधाम के परब्रह्म के विषय में मात्र शब्दातीत अनन्य और अपार कह देने से उसके लक्ष्य में मन टिकता नहीं है। परमधाम की शोभा और लीला आत्मा को ध्यान का आकार देती है।
- किसी निर्धारित लक्ष्य के बिना सफर का महत्व नहीं रहता – सफर मुख्य रूप से भीतर की है।
- निराकार या कुछ ना होने की स्थिति में शान्ति का अनुभव तो हो सकता है, परन्तु आनंद की अनुभूति युक्त परम शान्ति तो साकार स्वरूप में ही होती है।
- आनंद लीला हेतु नित्य धाम (स्थान) की आवश्यकता भी रहती है। और 'नित्य' आनंद की अनुभूति 'नित्य' शुद्ध साकार स्वरूप से ही संभव है।

इसीलिए एक चिदघन स्वरूप श्री राज जी द्वारा परमधाम की वैविध्यता पूर्ण लीला का स्फुरण अविरत रूप से होता रहता है।

इसे परमधाम का "स्वलीला- अद्वैत" कहते है।

परमधाम चितवन का फल क्या?

- परमधाम मन की कल्पना, चित्त की धारणा और बुद्धि के ज्ञान से नहीं जाना जा सकता। इसे तारतम ज्ञान के प्रकाश में और अनन्य श्रद्धा एवं प्रेम लक्षणा भक्ति भाव द्वारा जाना जा सकता है।
- परमधाम को जान लेना ही ब्रह्मप्रियाओं का सुहाग है।
- परमधाम की परात्माओं के प्रेम, स्नेह, सेवा भाव, एकदिली, अलौकिकता, साज-श्रृंगार तथा अष्ट प्रहर की दिव्य आनंद विहार लीला के प्रत्यक्ष वर्णन द्वारा आत्म-खोजी सुंदरसाथ को लीला के ध्यान-चितवन के लिए प्रेरणा है।
- इस की शोभा और आनंद लीला के ध्यान के चितवन से आत्मा को निजघर के अनन्त सुखों की लज़्ज़त और जीव को कर्म बंधनों से अखण्ड मुक्ति मिलती है।

काल और सीमा के बंधन से अर्थात समय से परे होने से परमधाम में पुनः जागने के पश्चात परात्माओं को

ऐसा अनुभव होगा जैसे मूल मिलावे में बैठकर ब्रज, रास और वर्तमान जागनी लीला ये तीनों को एक पल मात्र में ही देख लिया है

सोई घडी सोई पल।

हमारे चितवन में प्रियतम धनी के अनंत गुणों के सागरों का पूरा खिलाव हों इस के लिए क्या आवश्यक है?

चितवन में (और चर्चनी सीखने की प्रक्रिया दरम्यान भी!) परमधाम के इन आधारभूत बातिनी गुणों का सतत ध्यान हमेशा रहने से हमारे चितवन में प्रियतम धनी के अनंत गुणों के सागरों का पूरा खिलाव होना संभव है:

१. प्रेम, सुन्दरता, ज्ञान, परम आनंद आदि की अपार (प्रचुर) मात्रा है, अपनी महिमा में स्थित है, भूमा है। पृथ्वी लोक की तरह सीमित थोड़े रूप में नहीं है।

२. अभावरहितम् - प्रतिबिम्ब में भी कोई अभाव नहीं।

३. पूर्णता, अर्थात, एक अंश या कण भी सर्व तरह से पूर्ण: परब्रह्म में कोई भी वस्तु इस प्रकार से पूर्ण चेतन है कि उसमें से कितना भी कम किया जाय, वह पूर्ण ही रहती है और जो निकाला हुआ अंश होता है वह भी पूर्ण होता है।

४. संघर्ष विहीनं, अर्थात, पदार्थों को ग्रहण करने में किसी भी प्रकार का संघर्ष नहीं। प्रेम की एकरसतामें भेद नहीं रह जाता, शब्दों के सिद्धान्त सब गिर जाते है। क्यों कि जो रस हमें मिलता है. वह दूसरे से छिनकर नहीं, बल्कि उसको भी प्राप्त हो जाता है।

५. एकरूपता: हर चीज दुसरे का रूप लेने में सक्षम, 'ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति - ब्रह्म को जानकर जीव ब्रह्म समान हो जाता है।

६. अनिच्छितं -चाहना रहित, पूर्ण संतृप्ति हर पल

७. जैसा हर सम्बन्ध स्थायी - सदा के लिए है , जैसे नदी-सागर संयोग

८. असीमित अर्थात, अनघिरा, स्वयं में हर प्रकार से परिपूर्णतम (होलोनिक)।

परब्रह्म के परमधाम की शोभा एवं परिक्रमा: जाहिरी और बातिनी परिचय

परमधाम के स्वरूप, शोभा और लीला आनंद इस जगत की शोभा, जीवन शैली, रात-दिन के समय, कार्य-कारण आदि से परे होने के बावजूद परमधाम को इन्हीं का आधार ले कर समझना क्यों जरूरी है?

- **आत्म-खोजी सुंदरसाथ जी को अक्षरातीत परब्रह्म के स्वरूप की वास्तविकता अर्थात उनकी 'हकीकत' ग्रहण हो और उन्हें चितवनी का ठोस आधार मिले इस के लिए उन्हीं के विस्तृत स्वरूप को परमधाम और लीला के रूप में दर्शाया है|**

- **आत्मा के हृदय में प्रेम अंकुरित हों इस के लिए यह सब जरूरी है| बिना दिव्यतम प्रेम (इश्क) का महात्मय समझे हृदय में प्रेम अंकुरित नहीं होता| और बिना प्रेम के मोह का लय नहीं होता, बिना मोह का लय हुए विरह की अनुभूति नहीं होती| ऐसे में पिया मिलन की संभावना नहीं बन पाती।**

- **इस लिए, श्री राजजी के नूरी स्वरूप का प्रेमानन्द लीला हेतु जो विस्तार हुआ है वही सम्पूर्ण परमधाम के विभिन्न मनोरम तथा वैभवपूर्ण पचीस पक्ष (क्रीड़ा स्थल) जैसे कि रंग महल, हौज कौसर तालाब, कुञ्ज निकुंज वन, माणिक पहाड़, वन की नहरें, पश्चिम की चौगान, बड़ो वन, पुखराज पहाड़, श्री यमुना जी नदी, आठ सागर और आठ जिमी के रूप में वर्णित है|**

- **फिर, परमधाम की शोभा को और आकर्षक बनाने के लिए सर्व श्रेठ प्राकृतिक सौंदर्य, ऊंचाई, गहराई तथा विशालता, हीरा जवाहरात, पहाड़, आसमान, समुद्र, विभिन्न प्रकार के पशु-पक्षी-प्राणियों के नाम और शोभा, नूरी रंगों की झिलमिलाहट, प्रत्येक रंग से निकलने वाली अनेक तरंगें, अनेक रंग ,सुंगध और स्वाद से भरे फल-फूल ,महल, दीवालों पर विभिन्न प्रकार की चित्रकारी, हिंडोले, नृत्य लीलाएं, भव्य सवारियां, हास्य-विनोद की रामतें, संगीत गायन आदि दिनचर्या का वर्णन, परमधाम की परात्माओं के प्रेम, स्नेह, सेवा भाव, एकदिली, अलौकिकता, साज-श्रृंगार तथा अष्ट प्रहर की दिव्य आनंद विहार लीला का प्रत्यक्ष वर्णन है|**

यह सब आत्म-खोजी सुंदरसाथ को धाम लीला के ध्यान-चितवन में सहायक हों इस के लिए दर्शाये है।

परब्रह्म के परमधाम की शोभा एवं परिक्रमा: जाहिरी और बातिनी परिचय

परमधाम के चैतन्य के वर्णन में पाँच तत्वों का और यहाँ के मापदंडों का आधार लिया जाता है, इसे कैसे समझें?

- **परमधाम का चैतन्य अपने मूल-स्वरूप में 'श्री राज' है (राज = सर्वश्रेष्ठ प्रकाश)।**
  - **श्री राज के प्रकाश में उनका ऐश्वर्य अनन्त रूपों, रंगों और दृश्यों में ठीक झलक रहा है, जैसे एक हीरे से कोई महल बना हो और उसमें अनेक चित्रकारी झलक रही हो।**
  - **परमधाम का कणकण एक ही चैतन्य से है, लेकिन हमारी आंखों के सामने उस धाम के स्वरूप दिखते रहे, हमारी बुद्धि इसे ग्रहण कर पाए इस के लिए उसे रत्नों जैसा चमचमाता, सागर जैसा गहरा, पर्वत जैसा विशाल दर्शाया है|**
- **परमधाम के श्याम-श्यामाजी का प्रेम चैतन्य घनत्व धारण कर लेता है तो कहीं महलों की दीवालों के रूप में तो कहीं पर्वतों और बनों के रूप में सघन बन जाता है|**
  - **वही चैतन्य जब जल की तरह प्रवाहित होने लगता है तो वह सागर, नदी, तालाब, झील, कुंड, फ़ब्बारों, बारिस, बूंदों के रूप दर लेता है| वही चैतन्य निखरकर वन-उपवन की हरियाली की शोभा बिखेरते हुए सर्वत्र अपना फैलाव करता है|**
  - **और वही चैतन्य नाना प्रकार के पशु-पंछियों के चेतना केन्द्रों के साथ हिलोरें लेने लगता है। इसी चैतन्य की ऊँचाई को 'मावत नहीं आसमान' कह दिया जाता है, जो अनेक प्रकार से हिलोरे लेता हुआ खेलता रहता है।**

इसे बस ऐसे समझें कि परमात्मा दिखाने वाले हैं, आत्मा सदैव देखनेवाली है। अनन्त (भूमा) सान्त (सीमित) बनकर ही अपने को दिखा सकता है। अनन्त - सान्त का यह खेल अनादि काल से चला आ रहा है। जो खेल हम इस समय पृथ्वी पर देख रहे हैं उसका नम्बर अभी आया है, आगे भविष्य में देखिए कौनसी लीला हमें दिखाई जाए!

परब्रह्म के परमधाम की शोभा एवं परिक्रमा: जाहिरी और बातिनी परिचय

हमारी आत्मा को जो व्यष्टि रूप में दिख रहा है, यह हमारा अपने दिल का परम धाम है,
और जो दिखा रहा है वह असल परमधाम (परब्रह्म स्वयं) है।

अर्स दिल मोमन कहा, ठौर बड़ी कुशाद। हक हादी रूहें माहें बसें, असल अर्स जो आद॥ (सिनगार 19/62)

दो दृष्टांत: सुन्दरसाथ और परब्रह्म श्री राजजी का संबंध ठीक ऐसे ही है, जैसे एक जीव कोश और शरीर का| एक सुन्दरसाथ के दिल में होने वाला अनुभव और परमधाम के परब्रह्म को होने वाले अनुभव के बीच संबंध ऐसे ही समझें, जैसे स्वप्न में पैदा होने वाले अनेकों जीवों में से एक जीव का अनुभव और स्वप्नद्रष्टा का अनुभव|

(1) क्या हमें हमारे शरीर में करोड़ों जीव कोष क्या अनुभव कर रहे हैं, उसका पता होता है? नहीं न? क्योंकि हम तो करोड़ों जीव कोषों से बने पूरे शरीर का एक साथ अनुभव कर रहे हैं। हम ऐसे अनेकों अनुभव नहीं करते हैं कि इस कोश ने यह अनुभव किया और उस कोश ने वह अनुभव किया|

(2) स्वप्न में हम ही एक ओर कई जीवों का रूप धर लेते हैं और हर जीव का - खंड-खंड का अनुभव लेते हैं| और दूसरी ओर, हम पूरे स्वप्न का सम्पूर्ण अनुभव स्वप्नदृष्टा बनकर भी लेते हैं| - "एकत्वेन पृथकत्वेन बहुधा विश्वतोमुखम् " (गीता, 9/15)

परब्रह्म के परमधाम की शोभा एवं परिक्रमा: जाहिरी और बातिनी परिचय

हमारी आत्मा को जो व्यष्टि रूप में दिख रहा है, यह हमारा अपने दिल का परम धाम है,
और जो दिखा रहा है वह असल परमधाम (परब्रह्म स्वयं) है।
अर्स दिल मोमन कहा, ठौर बड़ी कुशाद। हक हादी रूहें माहें बसें, असल अर्स जो आद॥ (सिनगार 19/62)

इस तरह, जागनी लीला में परब्रह्म श्री राज जी और परम धाम को हमें दो रूपों में देखना चाहिए:

(1) सूक्ष्म रूप - वह परमधाम जो हमें अपने भीतर 'अंतर' में अनुभव में आता है- 'अरस तुम्हारा मेरा दिल' जहां 'हक छिन में कई रूप बदले।' जहां वे नाना रूपों के शृंगार करके हमें लीलाएं दिखाते हैं-' धनी इनों के कारण स्वरूप धरे कई करोड़।' लेकिन परमधाम तो अत्यंत विशाल है - 'ठौर बड़ी कुशाद' बादल जैसा खुला, बिखरा हुआ स्वरूप, विशाल, उदार दिल| अत:

(2) अनंत - बेशुमार स्वरूप वाला असल परमधाम, जो परमात्मा अपनी आत्माओं को नाना रूप से दिखा रहे हैं, जहां सभी आत्माओं का जमावड़ा है, जहां परमात्मा स्वयं उन सब रूपों का आश्रय - चिदरूप है, जहाँ वे प्रज्ञानरूप है (जो जानते हैं कि सबको कौन-सी लीला दिखानी है, इसका ज्ञान रखनेवाले हैं|) यह हुआ पूर्णात्पूर्ण अनंत स्वरूप हैं।

(वेद-स्वसं वेद प्रकरण 7 में पढ़ें : 'मन की संयोजन शक्ति')

जो प्रदक्षिना निजधाम की सातों सरूप श्री राज।
सो सारे परना मिने, वास्ते सैंयन के सुख काज।। बीतक १७/६६

ब्रह्मसृष्टियों को निजधाम का शाश्वत् आनन्द देने के लिये

परमधाम पच्चीस पक्षों की सातों परिक्रमा तथा श्रीराजजी के सातों स्वरूपों का

अवतरण श्री ५ पद्मावती पुरी धाम पन्ना जी में हुआ।

0 रंगमहोल में श्री राज जी की परिक्रमा

१ . रंग महल की नजदीकी में चांदनी चौक(अमृत, जाबून, नारंगी, बट), वटपीपल की चौकी, फूल - नूर बाग, लाल चबुतरा, खडोकली, ताडवन, (केल, लिबोई, अनार, अमृत) वापिस चाँदनी चोक

२. पुखराज पहाड़, जमुना जी, सात घाट वन, हौज कौसर तालाब, कुंज निकुंज वन, चौबीस हांस का मोहोल, नूर बाग और फूल बाग, पश्चिम की चौगान, लाल चबूतरा, खड़ोकली ताड़वन, बड़ोवन, मधुवन, महावन,

३. जेवरों की नहरें

४. माणिक पहाड़ ,बड़ोवन, मधुवन, महावन

५. बन की नहरें

६. चार हार हवेलियां (छोटी रांग)

७. बड़ी रांग (आठ सागर -आठ जिमी)

Sahoor

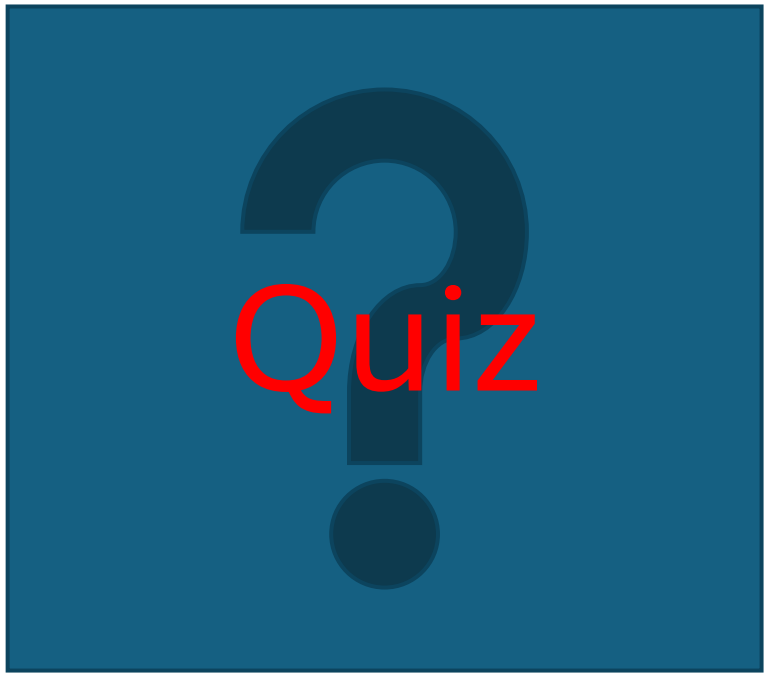
Quiz